Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

संगीत नाट्य व साहित्य के क्षेत्र में व्यावसायिक संभावनायें

DR. SOUMYA KUMARI[1] AND DR. ALKA RANI[2]

Guest Faculty (Music), Faculty of Education Banaras Hindu University, Varanasi
Associate Professor, Faculty of Education Banaras Hindu University, Varanasi

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तत्वाधान में रोजगारपरक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। वैश्विक स्तर पर आर्थिक संकट व रोजगारों की कमी व कर्मचारियों की छंटनी ने युवा वर्ग को अत्यधिक दबाव व भविष्यपरक आशंकाओं से ग्रसित कर दिया है। भग्नाशा, तनाव व मानसिक दबाव के परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए व्यावसायिक संभावनाओं को तलाशने की आवश्यकता एक चुनौती के रूप में सामने आ रही है। स्वस्थ समाज के जिम्मेदार नागरिक निर्माण की प्रक्रिया में व्यावसायिक शिक्षा की महती भूमिका है। प्रस्तुत लेख युवा वर्ग के लिए संगीत, नाट्य व साहित्य के क्षेत्र में व्यावसायिक संभावनाओं से अवगत कराने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मुख्य शब्द:- संगीत, नाट्य, साहित्य, शिक्षा, व्यवसाय, सम्भावना, संस्कृति।

भूमिका

विविधताओं की धरा पर जब-जब संकट आया, मानवीय मूल्यों प्रेम, दया, करूणा, परोपकार की छत्रछाया में व प्राचीन संस्कृति व संस्कारों ने नित नये कलेवर में सदा मार्ग प्रशस्त कर जीवन के उद्देश्य को सार्थक बनाने में अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया। संगीत की मधुर लय व तान हमारे मन को जहाँ शान्त व निर्मल करती है वहीं साहित्य ज्ञान का प्रकाश पुंज बनकर धर्म की राह पर ले जाता है। मानव निर्माण की श्रृंखला में प्रकृति का योगदान सदैव महत्वपूर्ण रहा है। प्राकृतिक छटा, मनोरम, दृश्य, वादियाँ, नदी, समुद्र, वृक्ष, पशु, पक्षी, जीव जन्तु सभी का मनोरम चिन्तन व दृश्य नाटय, संगीत व साहित्य की विविध विधाओं में परिलक्षित हुए हैं परन्तु जीविका निर्वहन, सांसारिक दायित्व दिखावे की प्रवृत्ति आदि के बोझ तले मानवीय मूल्यों का निरन्तर ह्रास देखने में आता है। बेरोजगारी, असफलता, प्रवेश परीक्षाओं का दबाव, प्राकृतिक आपदायें ऐसी ही अनेक समस्याओं से जन सामान्य प्रभावित है ऐसे में संजीवनी है हमारा संगीत व साहित्य, निराशा में आशा की किरण, सुख व दुःख की साथी, विचारों को परिमार्जित करने का स्रोत।

नई शिक्षा नीति 2020 में इन सभी संकटों का न केवल उल्लेख है बल्कि शिक्षाविद् इनका हल खोजने की दिशा में सक्रिय हैं। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास व मूल्यपरक शिक्षा उनके व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होती है। व्यवसायिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरित करना व आजीविका के अवसर तलाशने में मदद करना न केवल शिक्षा का दायित्व है बल्कि लोगों को मानवीय व व्यावसायिक प्रवृत्ति हेतु जागरूक करना भी है।

संगीत के क्षेत्र में व्यवसायिक सम्भवनायें

जीवन यात्रा के प्रत्येक क्षेत्र में संगीत का योग होने के कारण मानव सहज ही इससे जुड़ जाता है। वर्षों का संसर्ग उसे संगीत, सर्वांगीण व्यक्तित्व के विषय में जागरूक बनाता है। संगीत कला को ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ होने का गौरव प्राप्त है। मन को एकाग्र कर मोक्ष द्वार तक ले जाने वाला संगीत के अतिरिक्त सुगम व सरल मार्ग और कोई नहीं है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही संगीत कला का प्रयोग आध्यात्मिक व रंजकता के साथ-साथ व्यावसायिक दृष्टि से भी होता आ रहा है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

वर्तमान समय में तो संगीत ने व्यावसायिक दृष्टि से अपना एक अलग विशिष्ट स्थान बना रखा है। संगीत के क्षेत्र में अनेकों व्यावसायिक सम्भावनायें बढ़ गई हैं कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -

1. मंच प्रदर्शन
2. शिक्षक निर्माण
3. फिल्म संगीत
4. धारावाहिक संगीत
5. संगीत एलबम
6. संगीत स्टूडियो
7. वाद्ययन्त्र निर्माण व विक्रेता
8. संगीत यूट्यूब चैनल
9. आकाशवाणी उद्घोषक
10. रेडियो जॉकी
11. नाट्य संगीत

इन सभी में उच्च कार्य करने हेतु संगीत विषय का गूढ़ ज्ञान होना आवश्यक है। इस विद्या को जब तक साधना द्वारा साध न लिया जाय तब तक इस क्षेत्र में सही कार्य करना मुश्किल है। संगीत सीखने की प्रक्रिया पूर्व काल से ही चली आ रही है। सर्वप्रथम गुरु परम्परा इसके पश्चात् घराना परम्परा जैसे- ग्वालियर, आगरा, पटियाला, दिल्ली आदि तथा वर्तमान समय में संगीत विद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में भी एक विषय के रूप में जुड़ गया है। भारत में ऐसे भी कई संस्थान हैं जो केवल संगीत की ही शिक्षा प्रदान करते हैं, जैसे-

1. भातखण्डे संगीत संस्थान, लखनऊ
2. मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक, लखनऊ
3. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली
4. गन्धर्व महाविद्यालय, बम्बई
5. इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़
6. प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद
7. गांधी संगीत विद्यालय, कानपुर
8. सरस्वती संगीत विद्यालय, कर्नाटक (बंगलुरू)
9. म्यूजिक कॉलेज, कलकत्ता

इस प्रकार के अनेकों संस्थान भारत तथा भारत से बाहर भी हैं जहाँ प्रतिवर्ष लाखों विद्यार्थी संगीत शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तथा इसी क्षेत्र में अपना भविष्य बनाकर सुखपूर्वक जीवन यापन कर रहे हैं व सांस्कृतिक विरासत को जीवन्त रखे हुए हैं।

नाट्य के क्षेत्र में व्यावसायिक सम्भावनायें

जो रचना श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति कराती है उसे नाट्य या दृश्य-काव्य कहते हैं। नाटक में श्रव्य काव्य से अधिक रमणीयता होती है। श्रव्य काव्य होने के कारण यह लोक चेतना से अपेक्षाकृत अधिक घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। भरत मुनि के नाट्यशास्त्र को इस विषय का सबसे प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है। नाट्य वेद के निर्माण का कारण बताते हुए कहते हैं कि इन्द्र आदि देवताओं ने भगवान ब्रह्मा से जाकर कहा कि हम कोई ऐसा खेल चाहते हैं, जो सुना भी जा सके और देखा भी जा सके। अतः आप एक ऐसा पाँचवां वेद बनाए जिसमें सभी वर्णों के लोग सम्मिलित होकर आनन्द ले सकें। भगवान ब्रह्मा ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करके चारों वेदों का अनुस्मरण करके

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

'नाट्य वेद' नामक पंचम वेद की रचना की। इसी प्रकार नाट्य विद्या की शुरूआत मानी जाती है। वर्तमान समय में नाट्य विषय को व्यवसाय की दृष्टि से देखा जाय तो इसमें अनेकों क्षेत्र देखे जा सकते हैं-

1. नाट्य-प्रदर्शन
2. शिक्षण कार्य
3. चित्रपट अभिनय
4. नुक्कड़ नाटक
5. फिल्म निर्देशन
6. वेब सीरीज
7. यूट्यूबर
8. कंटेट क्रियेटर

इस प्रकार के कई क्षेत्रों में कार्य किया जा सकता है। नाट्य को विषय के रूप में भी कई विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षा दी जाती है। जैसे-

1. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली
2. फिल्म एण्ड टेजीविजन इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डिया, पुणे
3. सत्यजीत रे फिल्म एण्ड टेलीविजन इंस्टीटयूट, कोलकाता
4. बैरी जॉन एक्टिंग स्टूडियो, मुम्बई
5. एशियन एकेडमी ऑफ फिल्म एण्ड टेलीविजन, मुम्बई, कोलकाता, नोएडा और नई दिल्ली
6. सेन्टर फॉर रिसर्च इन आर्ट फिल्म एण्ड टेलीविजन, दिल्ली

इसी प्रकार और भी कई नाट्य विद्यालय भारत तथा भारत से बाहर कई देशों में अनेकों नाट्य विद्यालय हैं जहाँ नाट्य की शिक्षा लेकर अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया जा सकता है।

साहित्य के क्षेत्र में व्यावसायिक सम्भावनायें

सदियों से हिन्दी एक भाषा के रूप में स्थापित है, दुनिया में मैंडरिन और अंग्रेजी के बाद सबसे अधिक बोली जाने वाली हिन्दी भाषा ही हैं हिन्दी साहित्य, भाषा विज्ञान और समग्र हिन्दी भाषा के अध्ययन पर केन्द्रित है। जिसके अन्तर्गत हिन्दी कविता, उपन्यास, गद्य, निबन्ध, नाटक, रचनात्मक लेखन, पटकथा लेखन और संवाद लेखन शामिल है।

हिन्दी साहित्य के लिए कुछ प्रमुख कॉलेज -

1. मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली
2. मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, चेन्नई
3. फग्सन कॉलेज, पुणे
4. जे सोमैया कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड कॉमर्स, मुम्बई
5. जेवियर कॉलेज, अहमदाबाद

इस प्रकार अनेकों संस्थान हैं जहाँ साहित्य की शिक्षा दी जाती है तथा इसके अलावा भी अधिकतर विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में साहित्य विषय की शिक्षा दी जाती है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

साहित्य के विभिन्न विधाओं में व्यवसायिक सम्भावनायें इस प्रकार है-

1. पत्रकारिता
2. व्याख्याकार
3. सिविल सेवा
4. कंटेट लेखन/संपादन
5. अध्यापक
6. भाषण लेखन
7. पटकथा लेखन
8. आवाज सहयोगी
9. अनुवादक
10. कवि
11. गीतकार
12. संवाद लेखन (फिल्म/टी0वी0)

वर्तमान समय में भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत स्कूली शिक्षा से ही कला और संस्कृति के विभिन्न अवयवों का महत्व बताया गया है। अनुभव आधारित अधिगम पर विशेष बल दिए जाने के अन्तर्गत कला-समन्वित शिक्षण को कक्षा प्रक्रियाओं में स्थान दिया जाय। जिससे न सिर्फ कक्षा ज्यादा आनंदपूर्ण बनेगी बल्कि भारतीय कला और संस्कृति के शिक्षण में समावेश से भारतीयता से भी बच्चों का परिचय हो पायेगा। इस प्रकार के प्रयासों से ही शिक्षा और संस्कृति के परस्पर सम्बन्धों को मजबूती मिलेगी।

निष्कर्ष

शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव है। लोक परम्पराओं को जीवित रखने में संगीत, नाट्य व साहित्य की महती भूमिका है। तनाव से ग्रसित जनमानस को संगीत नाट्य व साहित्य एक ओर जहाँ स्वयं को तनावमुक्त व स्वस्थ रखने में सहायक है वहीं रोजगार के नये स्रोत व अवसर युवाओं को जीविका निर्वहन व रूचि अनुसार कार्य करने से संतुष्टि भाव विकसित करने में सहायक है।

सन्दर्भ

1. भरत आचार्य, नाट्यशास्त्र, बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, चैखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, संस्करण 1972
2. कुमार अशोक 'यमन', संगीत रत्नावली अभिषेक पब्लिकेशन्स, एस0सी0ओ0, पृ0सं0 669
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, दस्तावेज, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृ0सं0 18